सूरदास

काव्यांश 1

विषय-
1. 'पुरइन पात', 'देह न दागी', 'ज्यौं जल' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. प्रीति-नदी के अंदर रूपक अलंकार है।
3. इसकी शुद्ध एवं साहित्यिक ब्रजभाषा है।
4. 'ज्यौं जल माहं', 'गुर चांटी ज्यौं पागी' आदि में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
5. गोपियों द्वारा किया गया व्यंग्य बड़ा सटीक जान पड़ा है।

काव्यांश 2

विषय-
1. 'मन की मन ही मांझ', 'अवधि अधार आस आवन', 'संदेसनि सुनि-सुनि', 'बिरहिनी बिरह दही', 'धीर धरहिं' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. 'सुनि-सुनि' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
3. श्रृंगार रस का भेद वियोग का सुंदर उदाहरण है।
4. गोपियों द्वारा किया गया व्यंग्य बड़ा सटीक जान पड़ा है।
5. इसकी शुद्ध एवं साहित्यिक ब्रजभाषा है।

काव्यांश 3

विषय-
1. 'हमारैं हर हारिल', नंद-नंदन, 'करुई ककरी' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. 'कान्ह-कान्ह' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
3. 'ज्यौं करुई ककरी' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
4. इसकी शुद्ध एवं साहित्यिक ब्रजभाषा है।
5. गोपियों का कृष्ण के प्रति अपार प्रेम अभिलक्षित होता है।

काव्यांश 4

विषय-
1. 'समाचार सब', 'गुरु ग्रंथ', 'बढ़ी बुद्धि', 'अब अपनै' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. कृष्ण के प्रति गोपियों की नाराज़गी अभिलक्षित होती है।
3. इसकी शुद्ध एवं साहित्यिक ब्रजभाषा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in